प्रस्तावना

डॉ लीना गोयल
सम्पादक
हिन्दी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी

हिन्दी में कंप्यूटर की भूमिका विषय वर्तमान में बहुत अधिक सार्थक एवं उपयोगी है। हिन्दी के प्रति सभी देश वासियों का प्रेम सहज एवं स्वभाविक है, परंतु आज विश्व पटल पर हिन्दी केवल साहित्यिक रूप से ही नहीं अपनी एक अलग पहचान बना कर उठी है। कई चुनौतियों का सामना करते हुए आज उसने प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, कंप्यूटर आदि में भी अपना वर्चस्व साबित कर दिया है। इसी नए आयाम ने आज हमें इस प्रकार के विषय को संगोष्ठी का विषय बनाने का शुभ अवसर प्रदान किया है। इस संगोष्ठी का आयोजन सनातन धर्म कॉलेज के हिन्दी विभाग एवं कंप्यूटर विभाग तथा उच्चतर शिक्षा विभाग, पंचकुला, हरियाणा के संयुक्त तत्वावधान में किया गया साथियों जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हम एक हिन्दी भाषी देश भारत के निवासी हैं या हम कह सकते हैं कि हम हिन्दी की दुनिया में ही अधिकतर समय बिताते हैं तथा भारत जैसे बहुभाषी देश में अधिक से अधिक लोगों को उनकी अपनी भाषा में सूचना और सेवाओं के लिए सार्वभौमिक पहुंच उपलब्ध करवाना, अंतर्निहित प्राथमिक चिंता और चुनौतीपूर्ण विषय है।

एक ज्ञानवान समाज के निर्माण के लिए आम जनता को सक्षम बनाना और भाषा की बाधा के बिना संचार सुनिश्चित करना तथा सभी स्तरों पर समाधान और मानकीकरण सेवाएं उपलब्ध करवाना ही संगोष्ठी का मुख्य केन्द्र बिंदु है। इस संगोष्ठी के माध्यम से हम हिन्दी भाषा और कंप्यूटर के समन्वय, विकास, प्रभाव, प्रेरणादायक स्तोत्र को विभिन्न प्रतिभागियों के साथ बांटकर एक रचनात्मक वातावरण बना सकते हैं। देखा जाए तो यह हमारी आज की जरूरत भी है। क्योंकि आधुनिक युग में शिक्षा को ग्रहण करने या देने में यदि हम आधुनिकता को ग्रहण नहीं करेंगे तो हम दुनिया की दौड़ में पिछड़ जाएंगे। इसलिए हमें तकनीक से जुड़ना होगा और तकनीकी शिक्षा को अपनाना होगा ।

जब आधुनिकतम प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है तब हिन्दी शिक्षण में तदनरूप नवीनता लाना भी स्वभाविक हो जाता है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि भाषा सिखाने की परंपरागत विधियां त्याज्य है अब तक परंपरागत विधियां अपनी कारगरता सिद्ध करती आ रही है। आवश्यक है प्राचीन और आधुनिक विधियों के बीच एक मधुर सामंजस्य स्थापित किया जाए।

मुझे विश्वास है कि हमारी यह संगोष्ठी मधुर सामंजस्य को स्थापित करने में सकारात्मक प्रभाव डालेगी। हिन्दी में कंप्यूटर की भूमिका विषय में हिन्दी और कंप्यूटर से संबंधित संभावित विषयों पर शोध पत्रों को स्थान देने का उद्देश्य भी निश्चित रूप से इसी तथ्य की ओर संकेत करता है कि हिन्दी साहित्य की उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न विधियों के बारे में ध्यान देना चाहिए। हिन्दी को वैश्विक साहित्य का दर्जा प्राप्त करवाने में भी हमारी इस पुस्तक का महनीय योगदान होगा। कंप्यूटर, वेब, मीडिया, इंटरनेट जैसे आधुनिक माध्यमों के उपयोग से हिन्दी साहित्य एवं भाषा पर विश्व का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी केवल साहित्य की पारंपरिक विधाओं में सिमटकर ना रह जाए बल्कि इसका प्रयोग हर विषय जैसे विज्ञान, राजनीति, टेक्नोलॉजी, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबंधन इत्यादि में भी हो सके। इसके लिए हिन्दी की आधुनिक विधियों को अपनाना होगा।

आशीर्वचन

डॉ. राजेन्द्र सिंह
प्राचार्य

यह अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है कि हिन्दी में कम्प्यूटर की भूमिका विषय पर आयोजित ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी में हिन्दी कम्प्यूटर व अनरू विषयों के शिक्षकों एवं विद्वानों ने अत्यंत उत्साह व भरपूर ऊर्जा के साथ भाग लिया व अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। हिन्दी विभाग ने संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध पत्रों का संकलन कर पुस्तक रूप प्रदान करने का सराहनीय कार्य किया है।

इस प्रौद्योगिकी युग में हिन्दी भाषा को साहित्यिक भाषा के घेरे से बाहर निकालकर ज्ञान क्षेत्र में भी स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है। हिन्दी भाषा का वर्चस्व प्रत्येक क्षेत्र में होना ही हिन्दी को विस्तार प्रदान कर सकता है। वर्तमान युग कम्प्यूटर का युग है। अब वही भाषाएं सशक्त होंगी या यूं कहूं जीवित रहेंगी जो इंटरनेट पर विभिन्न विषयों में उपयोग की जाएंगी।

इस दृष्टि से अभी हिन्दी को समर्थ बनाने के लिए हिन्दी के विद्यार्थियें, शोधार्थियों, विद्वानों, विशेषज्ञों को बहुत प्रयास व श्रम करने की आवश्यकता है। हिन्दी में जितना भी कार्य ज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य के क्षेत्र में, शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में हुआ है उसे इंटरनेट की सामग्री बचना होगा तभी हिन्दी का विकास संभव है। हम हिन्दीभाषी क्षेत्र से सम्बंध रखते हैं हमारा दायित्व हिन्दी के प्रति विशेष है।

सनातन धर्म कॉलेज के संस्थापक भारत रत्न पं मदन मोहन मालवीय जी आजीवन हिन्दी के प्रति पूर्णतया समर्पित रहे उन्हीं के प्रेरणा से सनातन धर्म कॉलेज में हिन्दी में एम.ए. की कक्षाएं तब आरम्भ हो गई थी जब पंजाब विश्वविद्यालय में भी एम.ए. हिन्दी नहीं थी, इसलिए इस विभाग में हिन्दी जगत के प्रसिद्ध साहित्यकारों व शिक्षकों ने अपनी सेवाएं प्रदान की। प्रो. संसारचन्द, प्रो. हरिशचन्द्र वर्मा, डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, डॉ. रमेश कुन्तल मेघ, प्रो. जयभगवान गोयल, प्रो. यशगुलाटी, प्रो. लीलाधर वियोगी जैसे हिन्दी सेवी विद्वान शिक्षकों ने अपने ज्ञान व विद्वता से इस विभाग को नई पहचान दी। अपनी समृद्ध परम्पराओं का पालन करते हुए हिन्दी विभाग आज भी हिन्दी के प्रति पूर्णतया समर्पित है कम्प्यूटर युग में हिन्दी पिछड़ न जाए इस ज्वलंत चुनौती को ध्यान में रखते हुए अत्यंत समीचीन विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कराया मैं उन्हें बधाई देता हूँ कम्प्यूटर विभाग को भी मेरी ओर से बधाई देने इस विषय की गम्भीरता को समझा और नवीन प्रयास में अपना भरपूर योगदान दिया। मेरा आभार उच्चतर शिक्षा विभाग के निदेशक व स्टाफ के प्रति कि उनके सहयोग से यह संगोष्ठी कराने का अवसर प्राप्त हुआ। शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले और जिनके शोध-पत्र इस पुस्तक में प्रकाशित हो रहे हैं। उनको मेरी शुभकामनाएं। हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ. विजय शर्मा संगोष्ठी की आयोजन सचिव डॉ. लीना गोयल व समस्त हिन्दी विभाग को उनके इस सफल प्रयास के लिए बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

सम्बोधन

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
अधिवक्ता कला संकाय विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

विज्ञान और तकनीकी वर्तमान युग की आवश्यकता है और साथ ही साथ यह नए आयाम भी प्रस्तुत करता है। इन दोनों का सम्बन्ध शुरू से ही रहा है। एक युग था जब हम सारा कार्य हाथ से करते थे परन्तु कम्प्यूटर और तकनीकी के विकास के साथ हम इसी पर अधिक निर्भर रहने लगे हैं। शुरू में एक समस्या सामने आई वो यह कि कंप्यूटर में हिन्दी का प्रयोग कैसे शुरू किया जाए क्योंकि हम हिन्दी भाषी देश के निवासी हैं इस कारण यह एक महत्ती आवश्यकता बन जाती है। अंग्रेजी के अत्यधिक प्रयोग के कारण कंम्पयूटर में हिन्दी के प्रयेाग करने वालों के लिए समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई थी। भारत में विशेषज्ञयों ने इस पर काम करना शुरू किया। आज हम लगभग सारे कार्य हिन्दी में कंम्यूटर पर कर सकते हैं। और उसका सारा श्रेय हिन्दी के तकनीकी विशेषज्ञों को जाता है। आई.टी के इंजिनियरज़ के अथक परिश्रम से हिन्दी में कोरपस या कोरपोरा योजना शुरू हुई। इसके माध्यम से पाठों का संग्रह कर सकते हैं और विभिन्न भाषा के शब्दों को भी जोड़ सकते हैं। कारपोरा का प्रयोग कंम्पयूटर में हो रहा। इसका प्रयोग लिखित और वाचिक रूप में भी होता है। साहित्य, समाचार पत्र, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि की भाषा को इसमें शामिल कर सकते हैं। नाटक आदि की भाषा को इसमें शामिल कर सकते हैं। भाषा शिक्षण की दृष्टि से कंम्पयूटर आदि से इसमें क्रान्ति आई है। त्रिभाषी पर तकनीकी विशेषज्ञ का कर रहे हैं। सभी विश्वविद्यालयों में भाषा प्रयोगशाला है। सूचना प्रत्यापन के क्षेत्र में भी इसमें एक नई गति मिलती है। हिन्दी के शब्दों की खोज करना सरल हो गया है। अलता, विस्ता, याहू, गूगल क्रोम आदि के माध्यम से खोज करते हैं और हिन्दी में सारी सूचनाएं प्राप्त हो जाती हैं। यह भी आधुनिक कंम्पयूटर प्रौद्योगिकी की ही देन है कि बोलकर भी खोज कर सकते हैं। भाषिक माध्यम से बोलने के पश्चात् पृष्ठ पर पृष्ठ खुलते चले जाते हैं। इसमें वायस टाइपिंग टूल सबसे उत्कृष्ठ साधन है। ई महाशब्द कोष का निर्माण हो चुका है। पुस्तकालयों में अब हम केवल पढ़ने ही नहीं सुनने भी जा सकते हैं। नेत्रहीन विद्यार्थियों को इससे बहुत लाभ होगा। गूगल सर्च, एलेक्सा के माध्यम से भी आज हम सभी बहुत लाभान्वित हो रहे हैं। हिन्दी का की बोर्ड भी आ गया है। हिन्दी भाषा के लिए कई साफ्टवेयर बनाए गए हैं। जिससे प्रयोगकर्त्ताओं को कार्य करने में अधिक सुविधा उपलब्ध हो रही है। आज कम्पयूटर के क्षेत्र में एक नई क्रांति हुई है। विभिन्न शिक्षण संस्थान, विश्वविद्यालय हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने के लिए आगे आए हैं। इससे हिन्दी के विद्यार्थियों में हीन भावना समाप्त हुई है। आज कौशल विकास के माध्यम से हिन्दी एवं कम्पयूटर एक दूसरे के पूरक बन गए हैं। भविष्य में इस आधुनिक विषय में अपार संभावनाएं भी हैं और वर्तमान में इस पर अधिक से अधिक कार्य हो रहा है।

स्रोत वक्तव्य

अभिषेक त्रिपाठी
आई.टी. एसोसिएट डायरेक्टर, बेलफास्ट, आयरलैंड

आज के दौर में हिन्दी भाषा ऑनलाइन अन्य भाषाओं को टक्कर देने में सक्षम है। लगभग 50 करोड़ यूजर हिन्दी के होने वाले हैं। 90% से अधिक कॉन्टेंट हिन्दी के अभी तक आफ लाइन है जबकि केवल 10% ही आनलाइन है। जितना हो सके हमें हिन्दी का ऑनलाइन प्रयोग करना चाहिए ताकि, नये नये साफ्टवेयर निकलकर सामने आए। हिन्दी के यूजर जितने अधिक बढ़ेंगे उतना ही किसी भी कम्पनी को चाहे Microsoft, IBM हो Apple हो इस पर काम करना पड़ेगा और काम बढ़ता ही जाएगा। अन्य देशों में हिन्दी भाषा में काम करने वालों की आवश्यकता लगातार बढ़ती ही जा रही है और अच्छे पैकेज के साथ उनको रोजगार भी उपलब्ध करवा रही है। आयरलैंड जैसे छोटे-छोटे देशों में हिन्दी पहुँच चुकी है और रोजगार परक भी बन रही है। आयरलैण्ड ब्रिटिश का उपनिवेश था। भाषा का सराव उसी तरह आयरलैण्ड में भी रहा जिस तरह भारत में है। उन लोगों की मातृभाषा मौलिक है और मौलिक भाषा में संस्कृत भाषा का प्रार्दुभाव है। आयरिस भाषा के लोगों ने अपनी भाषा को बचाने के लिए दैनिक चर्चा में उसका प्रयोग शुरू किया। उन्हीं से प्रेरणा लेते हुए मैंने हिन्दी में काम करने का प्रण लिया। हिन्दी में जो काम-काज हो रहा उसकी जानकारी प्राप्त करके अपने शिक्षण संस्थानों में कैसे तकनीकी रूप उसे प्रयोग में लाया जा सके। इस विषय पर मैंने काम शुरू किया।

हिन्दी भाषा को तकनीकी भाषा बनाने में सबसे बड़ी दुविधा है कि हिन्दी भाषा, अंग्रेजी भाषा से एकदम अलग है। हिन्दी भाषा में सॉफ्टवेयर बनाने वाले हमारी भाषा के आंचलिक शब्दों से न्याय नहीं कर पाते, जो हमारी भाषा की आवश्यकता है यही कारण है कि हिन्दी भाषा को ऑनलाइन होने में इतना समय लगा। यूनिकोड की सहायता से फेसबुक, यू-टयूब, सोशल मीडिया की दुनिया में बहुत सारे विकल्प मिल जाएंगे जिस कारण प्रकाशन इसका लाभ उठा रहे हैं। हिन्दी भाषा को तकनीकी भाषा बनाने में CMC ने हिन्दी के लिए बहुत काम किया, वही IIT कानपुर ने C.Dack में हिन्दी के लिए काम किया, साऊथ इंडिया में कई विश्वविद्यालयों ने भी भाषा के लिए काम हो रहा है।

ऑफलाइन विषय को ऑनलाइन बनाने के लिये इंदुलेखा का प्रयोग किया जा रहा है। बहुत सारे काम हिन्दी में होने बाकी हैं। डाटा बेस अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हो पाए। डिजिटल इंडिया में हिन्दी साहित्य के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। C.Dack पूना में हिन्दी भाषा में नेच्युलयर प्रौससर प्रारम्भ किया अन्य भाषाओं के मुकाबले हिन्दी भाषा में सॉफ्टवेयर नहीं है। हिन्दी और कम्प्यूटर में बहुत सारा काम होना बाकी है। यूनीकोड का सॉफ्टवेयर हिन्दी में प्रकाशन करने वाले लोगों ने अपनाया नहीं है। प्रकाशन के लिए हिन्दी भाषा में बहुत सारे टूल होने चाहिए। ताकि उनका प्रकाशन एक साथ कई जगह हो सके। हिन्दी भाषा को हमें व्यापार और रोजगार की भाषा बनाना पड़ेगा जहां तक संभव हो सके हमें ऑनलाइन हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए चाहे वो क्लाउड पे ही क्यों न हो। ताकि by default (डिफाल्ट) उनको हिन्दी के सॉफ्टवेयर रखने पड़े उसके लिए हमें संघर्ष न करना पड़े।

मुख्य वक्तव्य

डॉ. नागेन्द्र कुमार

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की

हिन्दी में कंप्यूटर की भूमिका विषय आधुनिक युग में बहुत ही उपयोगी एवं सार्थक है। जहां एक और यह नए आयाम प्रस्तुत करता है वहीं कई समस्याओं का समाधान भी करता है। विभाजन की प्रक्रिया बनी रहती है। हिन्दी और अंग्रेजी की प्रतिस्पर्धा आपस में की जाती है जोकि तर्कसंगत नहीं है। ज्ञान विज्ञान जिस भी भाषा में उपलब्ध हो उसका भरपूर लाभ लेना चाहिए। हमें इस प्रकार के विवादों से हमेशा दूर रहना चाहिए कि ज्ञान विज्ञान किस भाषा में उपलब्ध है बल्कि सभी का ज्ञान जिस भी भाषा में हो उसी तरह से उसे अपनाना चाहिए। मानविकी विषयों में शोध आज का एक बड़ा प्रश्न है। शोधार्थी को बताना पड़ता है अलग-अलग टूलज उसमें अपनी भूमिका निभाते हैं। हमें अपने-अपने ढंग से मदद करनी होगी। कंप्यूटर की हिन्दी में भमिका विषय पर दो चीजें आवश्यक है एक तो यह हिन्दी को विश्व पटल पर ले जाने में कंपयूटर की क्या भूमिका है और कंप्यूटर को विश्व पटल पर ले जाने से हिन्दी की क्या भूमिका है। ये दोनों चीजें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। हमारा कोई भी काम बिना कंप्यूटर या प्रौद्योगिकी के नहीं हो सकता है। लेकिन हम कोई भी टूल विकसित करते हैं तो उसके पर्याप्त संसाधन के साथ-साथ पर्याप्त प्रेरणा भी होनी जरूरी है। आज हिन्दी में काम करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। बड़े से बड़ा औद्योगिक समूह इस बात की अनदेखी नहीं कर सकता कि हमारी वर्तमान युग में क्या-क्या आवश्यकताएं हैं। यही कारण है कि हिन्दी की भी कंप्यूटर को बढ़ाने में उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका है जितनी कंप्यूटर की हिन्दी को बढ़ाने में। 1990 में केवल बड़े-बड़े संस्थानों में कंप्यूटर का प्रयोग शुरू हो गया था। हालांकि उस समय आम धारणा थी कि कंप्यूटर को जानने के लिए अंग्रेजी का आना जरूरी है। 2002 में इसमें क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। कृतिदेव और चाणक्य जैसे फोंट विकसित हुए जिससे हिन्दी में काम करने वालों कल लगातार संख्या में वृद्धि होती चली गई। 2002 में यूनिकोड के तैयार होने से हिन्दी का प्रयोग कंप्यूटर में द्रुत गति से होने लगा। भारत में प्रौद्योगिकी की मार्किटिंग को देखते हुए गूगल पर ऐसा काम शुरू हुआ कि विश्व की सभी भाषाओं का ज्ञान दिया जा सका। तकनीकी भाषाविदों ने भी इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आधुनिक युग में डिजिटल हयूमैनिटी में भी आपार संभावनाएं हैं। आज ऑनलाइन लाइब्रेरी के तहत ही डिजिटल लाइब्रेरी का रूप सामने आ रहा है। इन अपार संभावनाओं से ही हिन्दी और कंप्यूटर आज एक ही सिक्के के दो पहलू बन कर सामने आए हैं और इसका उज्ज्वल भविष्य भी हमारे सामने उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

अध्यक्षीय वक्तव्य

प्रो. आनन्द वर्धन शर्मा
आईसीसी आर चेयर
विजिटिंग प्रोफेसर, सोफिया विश्वविद्यालय, सोफिया, बुल्गारिया।

आज का समय सूचना क्रांति का समय है। पर दो दशक से तो सूचना हमारी हथेली में रूकी हुई है इतना अधिक सूचना का जो भंडार आया है उसमें थोड़ी समस्यायें भी हैं और सुविधाएं भी हैं अब यह निर्भर करता है कि किस रूप में हम उसे देखते हैं और उसका प्रयोग अपने लिए किस रूप में सार्थक तौर पर और सकारात्मक तौर पर कर पाते हैं। पहले से भी सूचना ज्ञान के रूप में उपस्थित रही और पुस्तकों में जो ज्ञान था वह सूचना के रूप में था लेकिन पूर्ण रूप से उसे मेधा, विवेक रूप में और ज्ञान के रूप में बदलने का जो काम किया वो अध्यापकों ने किया या ये कहे कि उनके अतिरिक्त इस काम को कोई और कर भी नहीं सकता क्योंकि अध्यापक ही अपनी चेतना से, अपने विवेक से, अपनी समझ से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन भी करता है और उनमें छिपी हुई प्रकाश की किरण पूंज को गठित भी करता है तो आज सूचना का विस्फोट तो है पर उसे ज्ञान में परिवर्तन करने के लिए अगर अभी भी किसी की जरूरत है तो वो है अध्यापक। एक मार्गदर्शक तो होना ही चाहिए। हम जानते हैं कि हमारे देश में गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी सारी की सारी व्यवस्था होती थी। समाज की ओर से गुरुकुलों का संचालन किया जाता था और सनातन परम्परा जो है वो इस बात की हिमायती भी रही। इसी आधार पर हम देखते हैं कि पूरे देश में जो सनातन धर्म का प्रचार हुआ जो महाविद्यालय खोले गए उसमें शिक्षा को प्रसारित करने के लिए भी इसी एक बहुत बड़ी परम्परा है तो ये जो गुरुकुल थे उसमें जो आचार्य अपने वक्तव्य, संवाद के माध्यम से और शास्त्रार्थ के माध्यम से विद्यार्थी की बुद्धि को परिष्कृत करते थे उससे वाद-विवाद करते थे। निरन्तर आचार्य से आचार्य के बीच, विद्यार्थी से विद्यार्थी के बीच, आचार्य से मुख्य आचार्य के बीच शास्त्रार्थ होता था। विद्यार्थी से आचार्य के बीच जब अन्तिम दीक्षांत होता था तब शास्त्रार्थ होता था और तब विद्यार्थी वहाँ से दीक्षा लेकर आगे बढ़ता था। कालान्तर में ये परिस्थितियां थोड़ी परिवर्तित हुई और विद्यालयों और दूसरे शिक्षा संस्थानों में अध्यापन द्वारा शिक्षा दी जाती थी। यानि जहाँ पहले गुरुकुल में विद्यार्थी पूरी तरह रहते थे। छात्रावासी होते थे अब वे पुरी तरह छात्रावासी नहीं रहे दिन भर की उपस्थिति तो रहती है पर विद्यार्थी घर लौट जाते हैं। वह पूर्णकालिक छात्रावासी नहीं है। अब धीरे-धीरे तकनीक का विकास हुआ और तकनीक के विकास के साथ-साथ शिक्षा में अब केवल कक्षा अध्यापन बहुत महत्वपूर्ण नहीं रह गया है बल्कि कक्षा अध्यापन के तरीके भी बदले हैं। शिक्षा की बहुत सारी विधियाँ आ गई है। इसका एक बहुत बड़ा प्रमाण मुख्य शिक्षा व्यवस्था और दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था है।

आप सब जानते हैं कि हमारे देश का बहुत बड़ा संस्थान बहुत बड़ा विश्वविद्यालय केन्द्रीय विश्वविद्यालय जो अन्तर्राष्ट्रीय भी है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय इसके अलावा जो राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय है उनमें भी बहुत सारे विश्वविद्यालय लगभग अल्प देश में हैं। तो मैं इस बात की ओर संकेत करना चाहूंगा कि संचार के माध्यमों के आने के बाद उनके विकास के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी इसका निर्वाह किया गया।

अब जब हम विशेष कर कंप्यूटर व तकनीक की बात करें तो हम ये पाते हैं कि इस तकनीक के माध्यम से हिन्दी ने विस्तार ग्रहण किया व्यापकता ग्रहण की है। केवल भारत में नहीं बल्कि विश्व के स्तर पर तो सबसे पहले तो मैं हिन्दी के अध्येताओं से और कंप्यूटर के अध्येताओं से ये कहना चाहूँगा कि कंप्यूटर की भूमिका को भी हम सबको उसी सहज भाव से लेना चाहिए जैसे हम मोबाइल फोन को सहजता से ग्रहण करते हैं। आज हम देखें कि जिसे केवल अक्षर ज्ञान है वो चाहे पढ़ा लिखा न हो वो भी मोबाइल फोन में पढ़े-लिखे लोगों की तुलना में ज्यादा बेहतर तरीके से हिन्दी में टाइप कर पाता है। समाचार भेजता है, सूचनायें भेजता है, देखता है, यानि कि वो उससे सुपरिचित हो रहा है। उसका सुपरिचित होने का माध्यम उसकी मूल भाषा या हिन्दी है अंग्रेजी नहीं।

जब कंप्यूटर की भूमिका की बात करते हैं तो कुछ चीजें बहुत महत्वपूर्ण है। जैसे सूचना का संग्रहण, निर्माण, प्रदर्शन

या आदान-प्रदान है। ये सब उसमें सम्मिलित है। इसमें विशेष रूप से इलैक्ट्रानिक माध्यमों के द्वारा जो एप्लीकेशन है। उनका हम व्यवहारिककरण करे। इन एप्लीकेशन के बाद जो निर्मित हुई उसकी ओर हमें ध्यान देना है। उसको लेकर तकनीकी के क्षेत्र में बहुत काम किया जा रहा है। इस कंप्यूटर तकनीक में रेडियो, टी.वी. दुष्प्रभाव डालने वाली वीडियो सब इसमें सम्मिलित है। तकनीकी पक्ष का जो विस्तार हुआ है उससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। हिन्दी वालों को सोचना चाहिए कि जैसे वो दूसरे उपकरणों का प्रयोग करते हैं उसी तरह कम्प्यूटर के प्रयोग से हिन्दी का अधिक से अधिक विस्तार करे, व्यवहार करे, उपयोग करे, इससे हिन्दी का प्रचार-प्रसार होगा। साहित्य और शिक्षा दोनों इस तकनीक से बहुत गहराई से जुड़े हैं ये भी सच है कि कभी-कभी उसकी अति का भय सताता है। कई वैज्ञानिकों, लेखकों, साहित्यकारों, समाज-शास्त्रियों ने इस पर बात की। अल्बर्ट आंइस्टीन ने कहा भी है कि ये स्पष्ट रूप से देखा जा रहा है कि हमारी तकनीक कहीं मनुष्यता से आगे न निकल जाये। हिन्दी साहित्य या किसी भी विषय के साहित्य का काम मनुष्यता को बचाये रखना।

अब ये जो चिन्ता है ये केवल आइंस्टीन की नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लोगों की चिन्ता है। जरूरत है कि जो परम्परा गत चीजें चली आ रही हैं। उसका और तकनीक का सांमजस्य बैठे एक ऐसा समन्वय किया जाये जो वर्तमान परिस्थितियों के साथ-साथ ले कर चले।

तकनीक की सहायत से आज हम संकट काल में आर्थिक रूप से एक-दूसरे से जुड़ रहे हैं। शिक्षा जो पहले परम्परागत ढंग से चल रही थी आज तकनीक की सहायता से नई विधियों के साथ आयोजित हो रही है।

मॉरीशस ने तो अपनी सारी कक्षायें दूरदर्शन पर चला दी इस संकट काल में ये अवसर ही तो है कि तकनीक की सहायता से कक्षायें संचालित की गई इस कार्य में हिन्दी विषय वाले कहीं पीछे नहीं है। विदेशों में भी हिन्दी बहुत तेजी से पैर पसार रही है।

Hindisanja.com एक बहुत बड़ा प्लेटफार्म है जिसमें विश्व स्तर को हिन्दी की रचनाएं उपलब्ध है। कविता कोश, गद्य कोश, साहित्य कुंज, भारत डिस्कवरी कॉम, anubhuti.hindi.org, hindikiduniya.com.org आदि ऐसे बहुत से हिन्दी के मंच हैं और न्यूज वेबसाइट है। ऐसा लगता है कि हिन्दी की मशाल आज हर जगह प्रकाशित हो रही है।

सम्पादकीय

डॉ. विजय शर्मा
मुख्य संपादक
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी

हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। प्राय: विश्व के प्रत्येक देश में हिन्दी अपनी वैश्विकता के आधार पर धीरे-धीरे अपना वर्चस्व स्थापित कर रही है। भूमण्डलीकरण के इस युग में हिन्दी की ताकत को एक नई पहचान मिली है। परन्तु प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं की सामर्थ्य पर अभी अनेक प्रश्न चिन्ह लगाए जाते हैं। देवनागरी लिपि को वैज्ञानिकता भी सर्वविदित है। संस्कृत की सुपुत्री हिन्दी में शब्द निर्माण एवं विदेशी शब्दों के पाचन की अनुपम शक्ति है।

पिछले सात हजार वर्षों के इतिहास पर दृष्टि डालें तो भारत में भाषा की समस्या कभी रही ही नहीं थी। संस्कृत हमारे ज्ञान विज्ञान, दर्शन, विचार, तर्क राजनीति व न्याय की भाषा थी। हमारी समस्त सांस्कृतिक व ज्ञान सम्पदा इसी भाषा में सुरक्षित थी। शताब्दियों तक भारत विदेशी आक्रमणों से गुजरा तब भी न्याय, राजनीति और राजकाज की भाषा फारसी रही लेकिन हृदय की भाषा तब भी प्रान्तीय भाषाएं ही रही और मस्तिष्क की भाषा संस्कृत बनी रही। फिर इस्ट इंडिया कम्पनी ने मात्र डेढ सौ वर्षों में हमारी शिक्षा दीक्षा, विचार-तर्क, ज्ञान विज्ञान की भाषा को अंग्रेजी बनाकर संस्कृत के वर्चस्व को छीन लिया यह हमारी सबसे बड़ी पराजय थी। अपने विचार की तर्क की, दर्शन की अध्यात्म की और सर्वस्व की भाषा छिन जाने से समस्त विश्व के समक्ष हम अपनी ही विद्या को अपनी बोली में न कह सके और हमारी बौद्धिकता के भण्डार भरे के भरे रह गए और हम खाली हो गए। असहाय स्थिति में उनकी ओर मूक ताकते ही रह गए। स्वतंत्रता आन्दोलन की भाषा संस्कृत की बेटी हिन्दी ने निभाई और एक बार फिर भारत को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। हिन्दी जन-जन की भाषा बनी भारत स्वतंत्र हुआ हिन्दी में साहित्य निर्माण तीव्र गति से हुआ हर विधा पर संवेदनशील लेखकों की कलम चली, लोकप्रियता बढ़ी। निज भाषा उन्नति की आवश्यकता अनुभव हुई। अब संस्कृत पीछे छूट गई थी इतनी पीछे कि पकड़ी नहीं गई, कारण था दुनिया बदल गई, दुनिया के जीने का ढंग बदल गया। संस्कृत भाषा में रचित हमारे अनमोल ग्रंथों के प्रति इतनी भ्रांतियां पनप चुकी थी कि उन्हें मात्र परलोक प्राप्ति के निमित्त सिद्ध कर इस लोक के लिए अनावश्यक मान लिया गया। भारतीयता की अनुपम धरोहर, अनोखी पहचान, अद्वितीय ज्ञान आधुनिकता की भेंट चढ़ गया। मनुष्य प्रधान समाज में पाश्चात्य विचारधारा ने अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व में इस विशाल देश को इस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया कि हमारे पास ज्ञान सम्पत्ति को पूरे देश मे फैलाने के लिए कोई स्वदेशी माध्यम नहीं रहा। प्रान्तीय भाषाओं में उलझा भारत संस्कृत से छूट कर हिन्दी को ज्ञान सम्पन्न नहीं बना पाया। ज्ञान होते हुए भी गूंगा हो गया ऐसी विवशता जो शायद पहले कभी नहीं थी।

संसार को ज्ञान देने वाले भारत को अंग्रेजी भाषा में अपना ज्ञान देना पड़ा। अब हम जहाँ है यात्रा वहीं से शुरू करनी है। अपने संस्कारों और परम्पराओं पर हमें गर्व है। सूचना और प्रौद्योगिकी का यह युग अत्यंत तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। समय के साथ जो नहीं चल पाया वह पीछे छूट जाएगा, इसलिए यह एक सुनहरा अवसर भी है। कम्प्यूटर के इस युग में यदि हम अपनी भाषा व ज्ञान का कम्प्यूटरीकरण कर दें तो अब कोई उसे पीछे नहीं ढकेल सकता। इस नए युग में नूतन परिस्थितियों में यूनिकोड के आने से अब कोई भी भाषा कम्प्यूटर की भाषा हो सकती है। हिन्दी को अब मात्र साहित्यिक भाषा तक सीमित नहीं रखें। एक स्वतंत्र राष्ट्र के लिए एक विदेशी भाषा पर निर्भर रहना श्रेयस्कर नहीं है।

मानव सभ्यता के विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का बड़ा योगदान है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ भाषा का गहरा सम्बंध है और जिस देश और जाति का विज्ञान सबंधी ज्ञान जितना उन्नत होता है उतना ही भाषा उन्नत रहती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नए आयामों को देखते हुए अनुसंधानों के लिए प्रयुक्त शब्दावली को ज्यों का त्यों या कुछ संशोधन के साथ आत्मसात करने की महत्ती आवश्ययकता है। आज तकनीक की नई-नई विधाएं जैसे जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान भौतिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए-नए शोध हो रहे हैं, परन्तु अधिकतर कार्य अंग्रेजी भाषा में हो रहा है इसके लिए आवश्यकता हिन्दी को इस प्रकार के सभी वैज्ञानिक अनुशासनों के लिए प्रयोग करने की। यद्यपि सरल सुबोध समर्थ

पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण हो चुका है परन्तु उसका व्यापक प्रचार। प्रसार और प्रचलन नहीं हो रहा। सन् 1955 से शब्दावली निर्माण का यह कार्य व्यापक स्तर पर आरम्भ हुआ था लेकिन यह हिन्दी भाषा के प्रचार के अभाव में समाज इस शब्दावली से अभी अनभिज्ञ है। या यूं कहें प्रचलन में न होने के कारण यह शब्दावली कठिन भी प्रतीत होती है उसे सहज तभी बनाया जा सकता है जब प्रयोक्ता अधिक होंगे। हिन्दी भाषा में संतुलित और अपेक्षित शब्दावली तथा साहित्य उपलब्ध होने के बावजूद विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इसके प्रयोग को स्थगित रखना अनुचित है।

21वीं शताब्दी में 'हिन्दी के भविष्य', 'देवनागरी लिपि के प्रचलन', कम्प्यूटर युग और हिन्दी भाषा, हिन्दी भाषा व रोजगार वर्तमान पीढ़ी व हिन्दी, प्रौद्योगिकी के विकास में हिन्दी' आदि विषय विशेष चर्चा में। ई-शिक्षा के युग में अनेक तकनीकी सुधार हो रहे हैं। सरकारी व निजी प्रयत्न किए जा रहे हैं स्थिति में संतोषजनक परिणाम आने की संभावनाएं भी दृष्टिगत हो रही हैं। लेकिन अभी इस पर चिन्तन व चर्चा आवश्यक है क्योंकि इंटरनेट पर जिन भाषाओं में सर्वाधिक सूचनाएं उपलब्ध हैं उनमें हिन्दी की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। अगर हम हिन्दी को प्रौद्योगिकी व तकनीक की भाषा के रूप में विकसित नहीं करेंगे तो युवा पीढ़ी को इससे नहीं जोड़ पाएंगे। नई पीढ़ी को अपनी भाषा में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का ज्ञान भरपूर मिलना चाहिए, जिससे वह सम्मानजनक, आत्मनिर्भर और समृद्ध जीवन जी सके।

कृतज्ञता ज्ञापन

डॉ. गिरधर गोपाल
सम्पादक
अध्यक्ष कम्प्यूटर विभाग
सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी

सनातन धर्म कॉलेज अम्बाला छावनी के हिन्दी विभाग एवं कम्प्यूटर विभाग और उच्चतर शिक्षा निदेशालय के संयुक्त तत्वाधान में हिन्दी में कम्प्यूटर की भूमिका विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश के विभिन्न राज्यों के विभिन्न प्रतिनिधियों ने अपनी शोध अन्तर्दृष्टि सांझा की। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य भविष्य की सम्भावनाओं और चर्चा का विश्लेषण करना तथा उच्च शिक्षा संस्थानों के शिक्षाविदों, शोध विद्वानों और विशेषज्ञों को एक साथ लाना है।

अब वह दिन जा चुके हैं जब प्रत्येक शोधकर्ता केवल अपने एक ही विषय तक सीमित रहता था। आज अन्त:विषय अनुसंधान का युग है और पिछले एक दशक में मशीनी अनुवादकों की उपलब्धता का डिजिटल दुनिया पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। जिससे शिक्षकों के लिए अपने छात्रों से अधिक प्रभावी ढंग से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। प्रतिभागियों और लेखकों ने सक्रिय रूप से हिन्दी को बेहतर बनाने तथा इसे कम्प्यूटरीकृत करने के लिए विभिन्न विषयों पर जैसे-हिन्दी प्रेमियों की भाषागत कुंठा कारण व निवारण, इलैक्ट्रानिक और हिन्दी, मशीनी अनुवाद एवं हिन्दी, हिन्दी का बढ़ता वर्चस्व आदि पर अपने विचार सांझा किए। एक दिन की राष्ट्रीय संगोष्ठी से ज्ञात हुआ कि आज की दुनिया में विभिन्न मशीनी अनुवादकों के उपयोग की आवश्यकता और क्षेत्र बहुत व्यापक है।

इस संगोष्ठी में प्रतिष्ठित शैक्षणिक संगठनों के प्रसिद्ध विद्वान, शोधार्थी एक साथ अपने नए विचारों तथा शोध परिणामों का आदान-प्रदान करने एवं सांझा करने लिए एक साथ मंच पर एकत्रित हुए। इस तकनीकी दुनिया में हिन्दी के इतिहास और विकास के संबंध में सम्मानित विद्वानों और शोधार्थियों द्वारा अपने विचार उजागर किए गए।

इस क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी में कम्प्यूटर की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी को स्वीकृति देने के लिए हम उच्चतर शिक्षा विभाग, पंचकूला, हरियाणा के बहुत आभारी है। निरन्तर प्रेरणा और मार्गदर्शन देने के लिए हम कॉलेज प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र सिंह के ऋणी रहेंगे। हम इस संगोष्ठी की संयोजिका डॉ. विजय शर्मा के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने पग-पग पर हमारा मार्गदर्शन करके अपने उत्तम सुझावों द्वारा संगोष्ठी को सफल क्रियान्वित रूप दिया। संगोष्ठी की आयोजक सचिव डॉ. लीना गोयल का भी हृदय से आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने कम्प्यूटर विज्ञान, हिन्दी के क्षेत्र के शोधकर्ताओं के विषय पर अपनी बहुमूल्य अन्तर्दृष्टि सांझा करने के लिए एक बौद्धिक मंच प्रदान किया।

हम सराहना करते हैं हिन्दी विभाग से डॉ. सरयू शर्मा, डॉ. संदीप फुलिया, डॉ. अंजू शर्मा, डॉ. मनोज तथा कम्प्यूटर विभाग से सुश्री अमनदीप कौर, डॉ. रूचि शर्मा, सुश्री मीनाक्षी शर्मा, डॉ. पूनम, डॉ. मनदीप कौर, इस आयोजन को सफल बनाने में अपना भरपूर सहयोग दिया।

विशेष आभारी हैं डॉ. नीरू ठाकूर एवं डॉ. निर्मल सिंह जिन्होंने इस आयोजन की प्रतिपुष्टि कर हम सबका उत्साहवर्धन किया।

हम सम्मानित लेखकों और शोध पत्र प्रस्तुतकर्ताओं के योगदान के लिए भी आभारी हैं।

अंत में हम उन सभी के आभारी हैं जिन्होंने इस संगोष्ठी को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया है। हमें आशा है कि यह योगदान हमारे ज्ञान को समृद्ध करेगा और हम में से कई लोगों को इन चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों को अपनाने के लिए प्रेरित करेगा और हिन्दी के साथ प्रौद्योगिकी के सभिमिश्रण में यागदान देंगे।